## प्रेरक इरिना: गौ सेवा समर्पित जीवन की अनूठी गाथा

भारत, 'वसुधैव कुटुंबकम' की प्राचीन वैदिक परंपरा का पालक, एक ऐसा देश है जहां गाय और मनुष्यों के बीच का संबंध अत्यंत पवित्र और विशेष माना जाता है। यहां गाय को न केवल एक घरेलू पशु के रूप में देखा जाता है, बल्कि इसे एक दिव्य उपहार माना जाता है। इस तनावपूर्ण डिजिटल युग में भी, गायें हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई हैं। उनकी स्नेहिल और भावनात्मक प्रकृति के कारण वे न केवल सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत हैं, बल्कि बुद्धिमान और पर्यावरण-अनुकूल भी हैं।

गौपालन विशेषकर गाँवों में गरीब लोगों के लिए आजीविका का एक अभिन्न हिस्सा है। गायें न केवल दूध और अन्य उत्पाद प्रदान करती हैं, बल्कि उनकी उपस्थिति ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता भी लाती है। इसके अलावा, गायों से प्राप्त औषधियां आधुनिक बीमारियों का उपचार भी कर सकती हैं। इस प्रकार, गाय न केवल एक आर्थिक संसाधन हैं, बल्कि जैविक क्रांति को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

## 'द अदर मदर': एक अनूठी बायोपिक

इस कथा का मुख्य केंद्र बिंदु हैं पद्मश्री फ्रेडरिक इरिना ब्रूनिंग, जिन्हें 'सुदेवी माताजी' के नाम से जाना जाता है। इरिना को आमतौर पर 'गायों की मदर टेरेसा' कहा जाता है। उनकी प्रेरणादायक यात्रा को संजय वशिष्ठ द्वारा लिखी गई फिल्म 'द अदर मदर' में बयां किया गया है। इरिना का जीवन एक समर्पित गौ सेवक के रूप में अद्वितीय है, और वे संयुक्त राष्ट्र के 'शांति दूत' के रूप में भी पहचान रखती हैं।

## जीवन की चुनौतियाँ और प्रारंभिक वर्ष

1978 में, इरिना 20 वर्ष की आयु में बर्लिन, जर्मनी से भारत आईं। उनके मन में भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता की गहरी रुचि थी। भारत में आने के बाद, उन्होंने महसूस किया कि आध्यात्मिक उत्थान केवल एक योग्य गुरु के माध्यम से ही संभव है। एक भक्त की सलाह पर, उन्होंने एक घायल बछड़े की देखभाल की, जिससे उनकी गौ सेवा की यात्रा का आरंभ हुआ। धीरे-धीरे, वे मथुरा वृन्दावन क्षेत्र में गायों की देखभाल में संलग्न हो गईं।

1996 में, उन्होंने कन्हाई गाँव में राधा सुरभि गौशाला की स्थापना की। यह गौशाला उनके लिए केवल एक आश्रय स्थल नहीं थी, बल्कि यह उनके जीवन का उद्देश्य बन गई। इरिना ने अपने पिता को यह समझाने में सफल रहीं कि उन्होंने अपना जीवन गायों और प्रकृति की सेवा में समर्पित कर दिया है।

## गौ सेवा में समर्पण

गौशाला के संचालन के लिए, इरिना को हर महीने 23 लाख रुपये से अधिक का खर्च उठाना पड़ता है। इसके लिए, उन्होंने बर्लिन में अपने घर को किराए पर दिया, क्योंकि उन्हें कोई सरकारी सहायता नहीं

मिली। इरिना के अनुसार, "लोग बूढ़ी होने पर अपनी गायों को छोड़ देते हैं, लेकिन मैंने उनकी सेवा करने की जिम्मेदारी ली। हम लाखों ऐसी गायों की सेवा करते हैं जो दूध नहीं देतीं।"

## चुनौतियाँ और संघर्ष

2019 में, इरिना को एक बड़ी समस्या का सामना करना पड़ा जब भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने उनके छात्र वीजा को बढ़ाने से इनकार कर दिया। उनकी चिंता का विषय उनकी गायें थीं। उन्होंने सरकार को सूचित किया कि यदि आवश्यक हुआ, तो वे अपने राष्ट्रीय सम्मान, पद्मश्री, को लौटा देंगी। यह मामला मथुरा की सांसद हेमा मालिनी तक पहुंचा। उन्होंने इस मुद्दे को तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के पास ले गईं, जिसके परिणामस्वरूप इरिना का वीजा 'कार्य वीजा' में परिवर्तित कर दिया गया।

## स्थायी प्रभाव और सामाजिक जागरूकता

'द अदर मदर' कहानी सिर्फ इरिना की व्यक्तिगत यात्रा नहीं है, बल्कि यह उन असामाजिक तत्वों के खिलाफ उनकी लड़ाई को भी उजागर करती है जो जबरन वसूली और भूमि हड़पने में शामिल हैं। इरिना ने केंद्रीय मंत्री श्री पुरुषोत्तम रूपाला से मुलाकात की और उन्हें अपनी गौशाला के लिए भूमि की व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। अंततः, जनवरी 2022 में उन्हें राधा कुंड, मथुरा में 20 बीघा जमीन आवंटित की गई।

8 फरवरी, 2022 को भूमि पूजन समारोह के दौरान किसानों के एक समूह ने उनकी गौशाला के खिलाफ विरोध किया। हालांकि, समय पर उनकी टीम और स्थानीय प्रशासन ने स्थिति को संभाला, और समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

## जीवन के विभिन्न रंग

इस फिल्म में इरिना के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। इसमें उनके द्वारा घायल और संकटग्रस्त गायों की देखभाल, आध्यात्मिक यात्रा, और ग्रामीण जीवन के संघर्षों का चित्रण है। कहानी में राजनेताओं और अपराधियों के बीच सांठ-गांठ, जानवरों की तस्करी, और असामाजिक तत्वों की गतिविधियों को भी दिखाया गया है।

अंत में, कहानी का एक महत्वपूर्ण मोड़ आता है जब एक दिव्य गाय, 'कामधेनु', गायब हो जाती है। इस गाय के बारे में ग्रामीणों की एक मान्यता है कि यह इरिना के पास है। इसके चोरी होने पर इरिना और उनके सहयोगियों को उसे वापस लाने के लिए एक विशेष मिशन पर जाना पड़ता है।

## संदेश और निष्कर्ष

इरिना के जीवन के इस अद्भुत सफर के माध्यम से यह संदेश भी मिलता है कि गायें मानव समाज की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका मानना है, "गायें दुनिया को ठीक कर सकती हैं" और वे पर्यावरण के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। गौ सेवा से न केवल जानवरों की देखभाल होती है, बल्कि यह पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति जागरूकता भी फैलाती है।

यह कहानी हमें प्रेरित करती है कि हम सभी अपने जीवन में प्राकृतिक संतुलन और जानवरों के प्रति संवेदनशीलता को अपनाएं। इरिना माताजी का जीवन समर्पण, संघर्ष और प्रेम का प्रतीक है, जो न केवल गायों के लिए बल्कि मानवता के लिए भी प्रेरणा स्रोत है।